रमजान के महीने को वसूल कैसे करे?

हजरत मुफ्ती अहमद खानपूरी दब. हवाला- महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

रमजान के महीने को वसूल करने के लिये कया कया चीजें इख्तियार की जायेगी एक तो उसमे रोजा हे रोजा तो हे ही जो इस महीने की खास इबादत हे जो अल्लाह की तरफ से लाजिम की गयी हे लैकीन इस रोजे को रोजे का जैसा हक हे इस तरह अदा करने की जरूरत हे हम लौग सुबह से शाम तक अपने आप को भूखा पियासा तो रखते हे लैकीन रोजे की हालत मे इस रोजे से जिस तरह का अल्लाह के साथ ताल्लुक काइम करना चाहिये उसका हमारे यहां एहतेमाम नही होता.

इसी लिये बुजरूगो ने लिखा हे के इस रोजे के अंदर ६ आदाब की रिआयत करना जरूरी हे.

१. आंख की हिफाजत- आदमी अपनी आंख की हिफाजत करे ये बडा खतरनाक मसअला हे खास करके हमारे जमाने के अंदर आदमी घर मे बंद रहेगे एतेकाफ मे बेठेगा आजकल तो हमारे यहां एतेकाफ मे भी जा आते हे तो वहां पर भी मोबाइल की मुस्तकिल मुसीबत हो जाती हे रोकते हे तो और मुश्कील हो जाता हे तो. इस निगाह की हिफाजत जरूरी हे निगाह इतनी खतरनाक चीज हे के तमाम सुफीयाए किराम का उस पर इत्तेफाक

हे के बदनिगाही के साथ आदमी के दिल का ताल्लुक अल्लाह की जात के साथ काइम नही होता बाकी और भी बडे बडे गुनाह हे.

हजरत हकीमुल उम्मत (रह) फरमाते हे के बदनिगाही की वजह से आदमी की ताआत मे से नूर खतम हो जाता हे हम और आप नमाजें पडेगे और कुरान की तिलावत करेगे तो सवाब तो मिलेगा इस नमाज पर जो सवाब हे पूरा मिलेगा इस तिलावत पर जो सवाब हे वो पूरा मिलेगा लैकीन इस नमाज और तिलावत की वजह से हमारे दिल के अंदर जो केफीयत पैदा होनी चाहिये बदनिगाही की वजह से वो पैदा नही होगी.

रोजे मे अपनी बीवी को भी शोहवत की नजर से न देखे जैसे कोई आदमी कीमती से कीमती दवा इस्तेमाल करे तो उस दवा से जो फायदा होना चाहिये अगर परहेज नही करेगा तो वो सारी दवा उसकी बेकार जाती हे यहां इतना तो हे अजर तो जरूर मिलेगा ये अमल बिल्कुल बेकार जाने वाला नही हे और रोजे का हमारा फरीजा भी अदा होगा हम फरीजे से सुबुक दोश भी होगे लैकीन दिल के अंदर उसकी वजह से जो केफीयत पैदा होनी चाहिये जो समरात और फायदा दिल पर मुरत्तीब होने चाहिये वो इस से पैदा नही होगे बद-नजरी के साथ इस लिये बद-नजरी से अपने आपको बचाना हे निगाह की हिफाजत करना हे यहां तक के उलमा ने लिखा हे के रोजे की हालत मे अपनी बीवी की तरफ तक भी शहवत की नजर से न देखे उस लिये रोजे की हालत मे वो भी

हराम हे जब तक के रोजा हे तो बीवी को भी शहवत की नजर से नही देखना चाहिये.

२. जुबान की हिफाजत- हम जुबान की हिफाजत नही करते आज हम लौग झूठ गीबत से नही बचते बल्के हम लौगों ने गीबत को रोजे का वकत गुजारने का जरीया बना लिया हे हदीस मे आता हे नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद फरमाते हे रोजा ढाल हे रोजा अल्लाह के अजाब से अल्लाह के गजब से जहन्नम से बचाने का काम देता हे बशरते के आदमी उसको फाड ना दे (नसाइ). पेहले जमाने मे जो ढाल होती थी वो दुश्मन की तलवार को उसके वार को रोकने का काम करती थी तो वो ढाल अगर खूद ही शिगाफ वाली हे तो उस से वार रुक सकता नही गोया रोजे के जरीया आप शैतान के वार से अपने आप को बचा सकते हे बशरते के गीबत न हो.
दूसरी रिवायतों मे हे के नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया उसको फाडने का मतलब कया हे तो फरमाया के वो गीबत और झूठ की वजह से फट जायेगा इस लिये जुबान की हिफाजत भी जरूरी हे.

३. कान की हिफाजत- गाने वगैरा सुन्ने से आदमी परहेज करे बाज लौगों ने रोजे का वकत गुजारने के लिये टीवी को मशगला बना लिया हे के गाना सुन भी रहे हे और आंख भी गलत कारी मे मुब्तेला हे उस से बचना भी जरूरी हे.

४. दूसरे शरीर के अंग की हिफाजत इसी तरह हाथ पाउ वगैरा जो दूसरे शरीर के अंग हे उनको भी गुनाहो से बचाने का एहतेमाम हो.

५. हलाल माल से इफतार करने मे भी जियादती से बचे वैसे जरूरी हे के हलाल माल से इफतार करे और उसमे भी जियादा न खावे वैसे आम तौर पर दिन भर के भूखे हे और फिर रमजान मे मुख्तलिफ किसम की चीजें मिलती हे तो हम उसके उपर टुट पडते हे तो दिन भर की भूख की वजह से थोडा बहुत फायदा हूवा था वो भी खतम हो जाता हे.

६. खोयी हुई चिझो की तलाफी मे हम बहुत आगे बड जाते हे इस लिये जरूरी हे के उसमे भी तहदीद हो ता के नमाजों के अंदर जोक और शौक बाकी रहे हम लौग तो इतना खा लेते हे के मगरिब की नमाज पडना मुशकिल हो जाता हे तरावीह मे खडा होना मुशकिल हो जाता हे और साथ ही साथ डरता रहे के मालूम नही के अल्लाह के यहां मैरा ये अमल कबूल होता हे या नही.

रमजानुल मुबारक की नाकदरी करने वालों के लिये सख्त वइद:- हजरत कअब बिन मालिक उजरा (रदी) फरमाते हे एक मरतबा नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजराते सहाबा (रदी) से फरमाया मीम्बर के करीब आवो और आप मीम्बर पर चडने लगे जब आपने पेहले दरजा पर जिने पर कदम रख्खा तो फरमाया आमीन फिर दूसरे पर कदम रख्खा तो फरमाया आमीन

तीसरे पर कदम रख्खा तो फरमाया आमीन बाद मे हजराते सहाबा ए किरामने पूछा के ए अल्लाह के रसूल आज तो आपने उस तरह किया के पेहले ऐसा आपने कभी नही किया तो नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया के जब मैने पेहले जीने पर कदम रख्खा तो हजरत जिब्रइल (अल) आये और कहा जिसने रमजान का महीना पाया और उसकी मगफिरत नही हूवी ऐसा आदमी अल्लाह की रहमत से दूर हो और हलाक और बरबाद हो और नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर आमीन कहा हजरत जिब्रइल (अल) ने कहा के आप आमीन कहिये ये तो बहुत खतरनाक चीज हे के रमजान जैसा महीन गुजर जाये और खुदा न करे के हमे ऐसी हरकत करने की वजह से बजाये मगफिरत के मामला उलट जाये अल्लाह मैरी और आपकी हिफाजत फरमाये. आमीन.

रमजानुल मुबारक के दूसरे मशागिले:- तरावीह बडे जोक और शोक के साथ बडी रग्बत के साथ बडे एहतेमाम से अदा करना चाहिये ये नही के पीछे बेठे हे और इमाम जब रुकू मे गया तो जल्दी से उठ करके नियत बांध ली ये सारे तरीके बे रग्बती के हे और ये तो अल्लाह के गजब को लाने वाली चीजें हे इस लिये इससे बचने की जरूरत हे और आम अवकात मे भी कुरान की तिलावत कलमए तय्यीबा इस्तेग्फार उसका एहतेमाम किया जाये आखरी अशरे के एतेकाफ का एहतेमाम किया जाये अपने आप को गुनाहों से बचाने का

एहतेमाम किया जाये सब से बडी चीज ये हे.

तरावीह और उसके साथ हमारा सुलूक:- तरावीह रमजान का एक खास अमल हे उसको भी जोक और शौक के साथ अदा करने की जरूरत हे हमारे यहां अवाम का हाल ये हे के जहां उनको पता चलता हे के फला हाफिज साहब बहुत जल्दी से तरावीह मुकम्मल कर लेते हे २० मिनिट मे और २५ मिनिट मे चाहे यालमून और तालमून के अलावा दूसरा कुछ समज मे न आवे फिर भी उसी को तरजी दी जाती हे बल्के कोई बेचारा बडे एहतेमाम के साथ तरतील के साथ पडने का एहतेमाम करता हे ठहर ठहर के तो ऐसों के पिछे पड जाते हे बाकाइदा उसकी ताना और तशनी और उसको इतनी तकलीफ पहुंचाते हे के तंग आ जाता हे ये तरीके गलत हे.

कुरान का हक:- नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते कुरान के बहुत से तिलावत करने वाले वो हे जो तिलावत कर रहे होते हे और कुरान उन पर लानत करता हे तो जैसा उसका हक हे वो अदा न करने की वजह से कुरान उन पर लानत करता हे.

कबर मे होगा ठिकाना एक दिन:- इस महीने मे एतेकाफ भी रखा गया हे एतेकाफ मे कया होता हे आदमी दुनीया वालों से कटकर अल्लाह के घर मे पड जाता हे लौगों के ताल्लुक खतम करके अल्लाह की जात से अल्लाह की ईबादत से अल्लाह की तरफ रूजू और अनाबत के जरीया से उन्सीयत हासिल करता हे इसलिये उलमाने

लिखा हे के यही उन्सीयत कल को कबर की तन्हाईयों मे आदमी के लिये कार आमद होगी के वहां कोई नही हे अल्लाह के साथ अगर हम ने दिल लगाना सिखा हे तो फिर नतीजा ये होगा के कबर मे जाकर भी हमें वहशत नही होगी लैकीन अगर दुनीया मे हमने ये सिलसिला काइम नही किया तो यही कबर हमारे लिये मुसीबत बन जायेगी.

अल्लाह हम सबको रमजान के हर एक एक लम्हे की कदरदानी नसीब फरमाये, आमीन. मुझ नाचीज को भी अपनी दुआओ मे याद रखना. ज्जाकुमुल्लाहु खेरन.